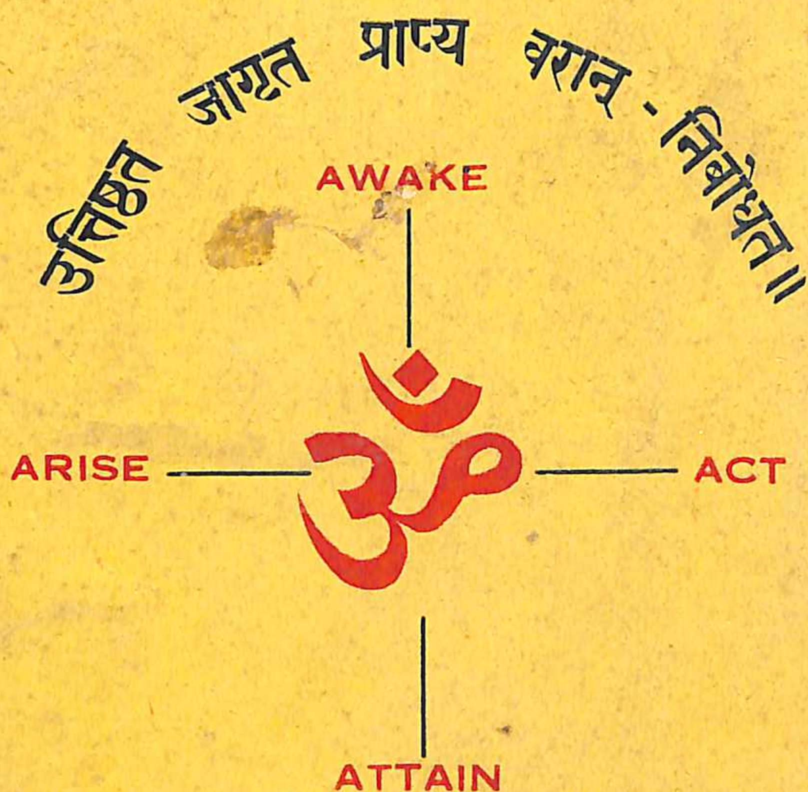
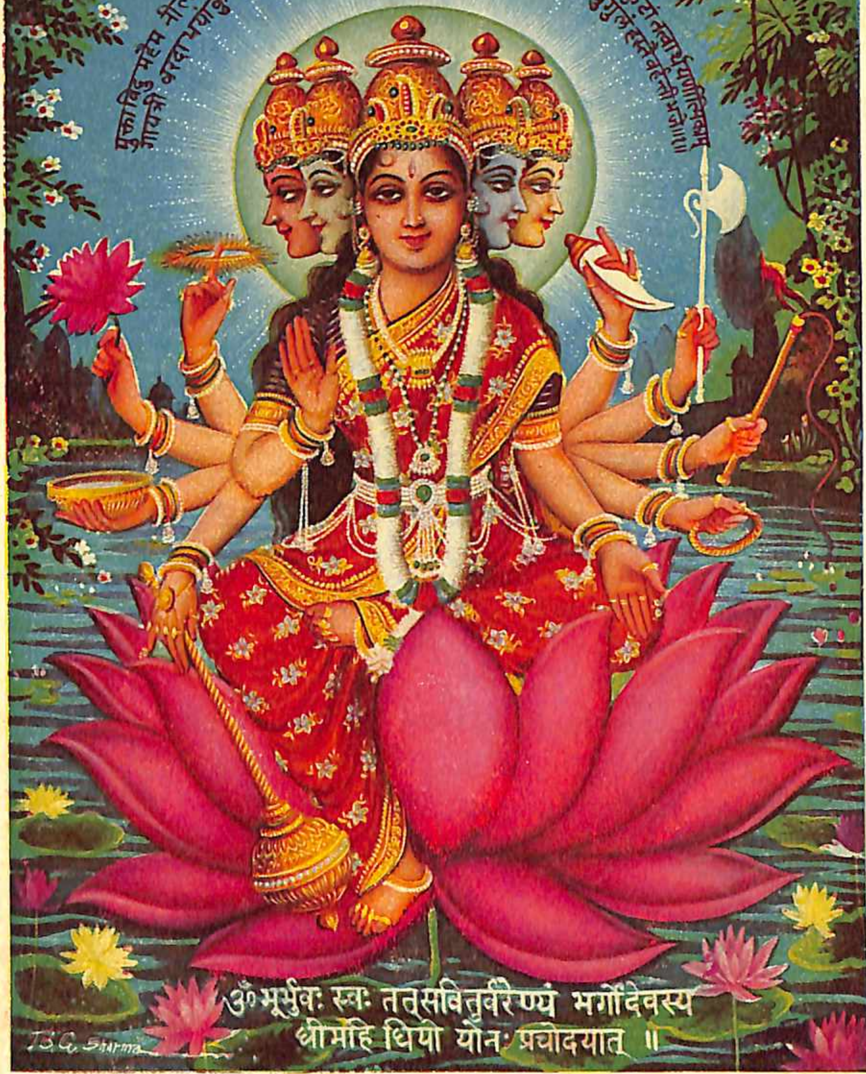
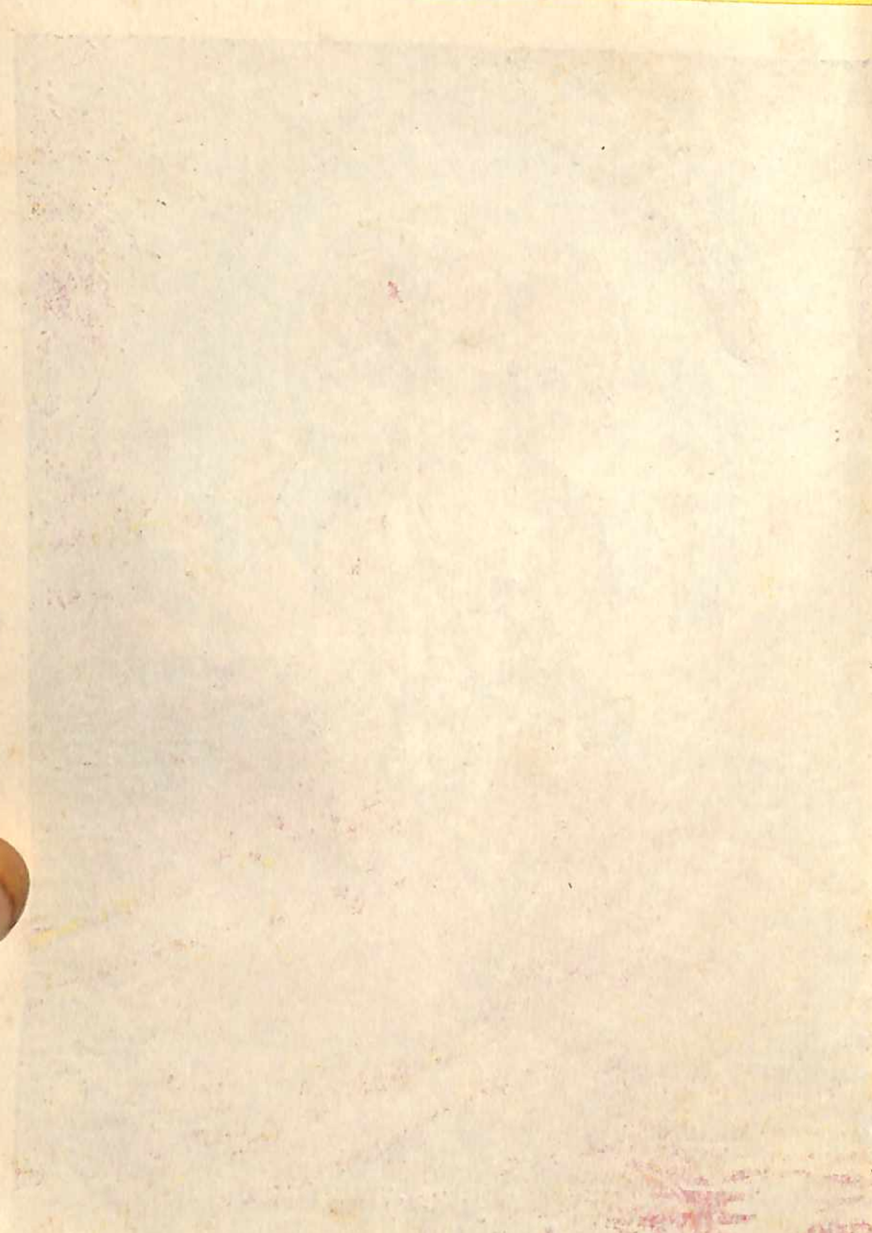
गायत्री निर्णय



स्वयमानन्द
६३/१ गणेश-घाट-श्रीनगर
तथा
१६ सोनावार-श्रीनगर (कश्मीर)

First Edition : Shivaratri 1969,
2000 copies.


ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य
धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥
T.S.G. Sharma





प्राक्कथन



शिवरात्रि के पवित्र उत्सव पर कश्मीरी हिन्दू जनता के हाथों में गायत्री-निर्णय की पुस्तिका को देखकर मन में अत्यन्त आह्लाद उत्पन्न होता है। आशा है कि यह पुस्तिका धार्मिक जनता को गायत्रीमन्त्र का अर्थ हृदयङ्गम करने में सहायता पहुँचा सकेगी।

पिछले कुछ समय से हमारी जाति का शारीरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक पतन हो रहा है और फलस्वरूप हमें कितने ही दुखों का सामना करना पड़ रहा है। इस सर्वतोमुखी पतन का मूल कारण यह है कि हमारे मन से आत्मिक विश्वास तथा धर्म के प्रति दृढ आस्था का भाव उठ गया है। ऐसा होना बहुत ही दुःखदायक है।

अपने आध्यात्मिक उत्थान के लिये गायत्री-मन्त्र का जप करना तथा इसका अर्थ समझना प्रत्येक सज्जन का कर्तव्य

है। इससे जहाँ जीवन में एक प्रकार का अनुशासन आता है वहाँ उत्कृष्ट प्रतिभा का विकास भी हो जाता है। मानसिक चंचलता दूर होती है और वैषयिक पिपासा धीरे-धीरे शान्त हो जाती है। फलतः मनोवैज्ञानिक स्तर का क्रमिक विकास होने के साथ ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन होता है और मानव उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है।

आज के नाभिक युग के वातावरण में पला हुआ युवक पूछ रहा है कि आखिर गायत्रीमन्त्र का अर्थ क्या है और इसका जप करने से मुझे क्या प्राप्त होगा? इन दोनों प्रश्नों का समाधान प्राप्त करने के लिये आज का युवक तड़प रहा है परन्तु यह रहस्य की गुत्थी पूर्णतया खुलती नहीं है। इसी कठिनता को दृष्टिपथ में रख कर इस पुस्तिका में साधारण से साधारण शब्दों में गायत्रीमन्त्र का अर्थ तथा इस का महत्त्व समझाने का प्रयास किया गया है। आशा है कि इस से इसका अर्थ कोई विशेष रहस्य न रहकर प्रत्येक व्यक्ति की समझ में किसी विशेष प्रयास के बिना आजायेगा।

अपने धर्म पर दृढ रहने से कल्याण की प्राप्ति होती है। परधर्म को अपनाने की अपेक्षा स्वधर्म में मरना ही श्रेयस्कर होता है। जो मानव स्वधर्म की रक्षा करता है धर्म ही उस की रक्षा करता है। यह बात निश्चित है। धर्म का पालन करने से ही आत्मिक शान्ति मिल जाती है और शान्ति का प्राप्त होना ही जीवन का महान कर्त्तव्य है॥

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥ गीता ३, ३५

आज के परम पवित्र त्यौहार पर हममें से प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म पर दृढ़ विश्वास रखने का प्रण करना चाहिये। उसी से हमारा नैतिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक पुनरुद्धार होगा। इसमें तनिक भी संशय नहीं है। अतः उठिये! जागृत हो जाइये और सद्विचार रूपी वर को प्राप्त करने का प्रयत्न कीजिये।

इस प्रयास को पूर्णरूप देने में जिन सज्जनों ने मेरी सहायता की है मैं उनको धन्यवाद देने के बिना नहीं रह सकता हूँ। विशेष कर श्री नीलकंठ गुरुटू प्राध्यापक हिन्दी-संस्कृत मेरे धन्यवाद के पात्र हैं क्योंकि उन्होंने मेरी विशेष सहायता की है।

!! शान्ति शान्ति शान्ति !!

स्वयमानन्द



ओं पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ (बृ० ५, १)
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

*वह परब्रह्म (पूर्णअहन्ता=इदन्ता का उद्गमस्थान) परिपूर्ण है; यह (इदन्ता=परब्रह्म से बाह्यरूप में विकसित हिरण्यगर्भवाच्य विश्व) भी परिपूर्ण है; उस परिपूर्ण परब्रह्म से यह परिपूर्ण विश्व व्यक्त नामरूपात्मकता का विकास प्राप्त करता है; यदि परिपूर्ण (इदन्ता) की भी परिपूर्णता (अहन्ता) को मनन का विषय बनाया जाये तो केवल परिपूर्णता (अहन्ता=परिपूर्ण परब्रह्म) ही अवशिष्ट रहती है ॥

That (Brahman=perfect 'I'ness) is All-Complete (Infinite); this (The manifested This'ness) is also All Complete (Infinite); the All-Complete (manifested Hiranyagarbha) acquires its tangibility from the All-Complete (Brahman); contemplation of the All Complete (source of the outer manifestation) of the All Complete (manifested Hiranyagarbha) brings home that there remains the All-Complete alone.

Om. Peace ! Peace !! Peace !!!

---

*वह स्वयं पूर्ण है उसमें कोई त्रुटि नहीं है, अतएव उसकी रचना में भी कोई त्रुटि नहीं। तुम उस पूर्ण (जगत) के भी पूर्ण को पकडो। उसको पकडने से तुम्हारी सारी त्रुटियां दूर होंगी और तुम पूर्ण होकर शेष रहोगे।

गायत्री निर्णय



गायत्री (गाय + त्री)

गाय= जो कोई भी इसका गान करता है।
Whosoever Sings.

त्री = रक्षा करती है।
Protects.

प्रश्न ;— यह गायन कौन करता है ?
Question :– Who Sings ?

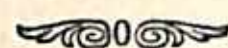
उत्तर :— पांच प्राण।
Answer :— Five vital airs.

प्रश्न :— इन पाँच प्राणों की कौन रक्षा करता है और इन में सृष्टिकाल से लेकर सूक्ष्म शक्ति का प्रसारण करता है ?

Question :— Who gives these vital airs protection and cosmic energy since the time of manifestation ?

उत्तर :— गायत्री।

Answer :— Gayatri.



मन्त्र

MANTRA



ओं भूर्भुवः स्वः
(तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात) ओ३म् !!

(ऋग्वेद संहिता ६२-१०)

Om Bhūr Bhuvah Svah (Tatsavitur Vareṇyam Bhargo Devasya Dhimahi Dhiyo yo Nah Prachodayat) OM. (*Rigveda Samhitā* 62–10)

प्रमाण Reference

काशी खण्ड KASHI-KHANDA

प्रथम प्रकार के विश्लेषण के अनुसार 'ओ३म्' यह पवित्र शब्द अ+उ+म् इन तीन मात्राओं से बना हुआ है। यह तीन मात्रायें भूलोक, भुवःलोक तथा स्वर्लोक का प्रतिनिधित्व करती हैं। साथ ही यह तीन मात्रायें ऋक्, यजुर तथा साम रूप वेदत्रयी का सार भी है।

According to one (grammatical) analysis 'अ', 'उ' and 'म' these three syllables form the sacred word 'OM' and three universes, viz. Bhū, Bhuvah, and Svah have been represented by these three syllables. Also these three syllables are the essence of the three **Vedas**, viz., **Rig, Yajur and Sāma.**

दूसरे प्रकार के विश्लेषण के अनुसार ओं रूप प्रणव में अ + उ + म + ‿ + ॰ यह पाँच मात्रायें हैं। यह पाँच मात्रायें क्रमशः इसप्रकार अभिव्यक्त करतीं है :—

According to second (grammatical) analysis 'OM' the **Pranva** consists of five syllables, viz., 'अ', 'उ', 'म्', '‿' and '॰' and these syllables denote the following :—

'अ' :– ब्रह्मा — सृष्टि करने वाला।

Brahmā— The Creator.

'उ' :– विष्णु — स्थापक।

Vishnu— The Protector.

'म्' :– रुद्र — संहर्ता।

Rudra — The Destroyar.

'◡' :– अर्द्धचन्द्र-ईश्वर।

Ārdha Çandra (Half Moon) the Iśvara

'.' :– बिन्दु — परम शिव = अनुत्तरतत्त्व।

Bindu — Param Śiva — also known as Anuttaratatva (second to none).

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
या प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्॥
(भ० गी० ८, १३)

जो पुरुष, ॐ ऐसे इस एक अक्षर रूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप मेरे को चिन्तन करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है वह पुरुष परम गति को प्राप्त होता है।

' Om '— the Brahman, and meditating on Me— he who so departs, leaving the body, attains the supreme Goal. (Bhag. Gita 8/13)

तद् :— वह

That

सवितुः :— अन्तर आत्मा जो कि विश्व का सृष्टि कर्ता, स्थापक तथा संहर्ता है, जो तत्त्व स्वप्रकाश होने के कारण उस मनस्, बुद्धि तथा अहंकारात्मक चित्त को भी प्रकाशित करता है। जिस (चित्त) से नामरूपात्मक व्यक्त जगत स्थिति प्राप्त करता है।

Pertaining to the Supreme Controller within, that effulgent Entity Who is the Creator, Protector and Destroyer of the three universes Being Self Shining Who illuminates the Mind (**Chitta** Comprising **Manas, Budhi** and **Ahankara**) from which (mind) the external manifestation takes place.

वरेण्यं :— सर्वोत्कृष्ट

Supreme.

भर्गो :— तेज अर्थात सृष्टि, स्थिति एवं संहार करने वाली स्वतन्त्र शक्ति।

(व्याकरण विश्लेषण के अनुसार 'भर्गो' शब्द में 'भ' 'र' और 'ग' यह तीन मात्रायें हैं। इन में प्रत्येक मात्रा का भाव इस प्रकार है।

'भ' वह तत्त्व जिससे तीनों लोकों की सृष्टि होती रहती है।

'र' पूर्ण आनन्दघनता जिससे तीनों लोकों को स्थिति प्राप्त होती रहती है।

"ग" वह तत्त्व जिस में सारे लोक प्रत्येक कल्पान्त के समय फिर विश्रान्त हो जाते हैं।)

the effulgence, *i. e.*, all independent creative, protective and destructive energy.

(According to grammatical analysis 'Bhargo word is composed of three syllables 'भ' 'र' and 'ग' which denote the following :—

"भ" that Entity by whom all the three universes are being created;

"र" the Full Bliss which provides the protection to all the three universes; and

"ग" that Entity wherein all the Universes merge again at the time of each Dissolution.)

देवस्य :— परम प्रकाशमान देवता का।
Pertaining to the Radiant Being.

धीमहि :— हम ध्यान करते हैं।
We meditate.

धियः :— प्रतिभा
Intuition.

यः :— जो
Who

नः :— हमको
to us

प्रचोदयात् :— वास्तविक ज्ञान प्राप्ति की ओर प्रेरित करे ॥
Stimulate for the realisation of TRUTH.

ऊपर की व्याख्या का सार इस प्रकार है :—

हम उस सर्वोत्कृष्ट महान् देवता के प्रकाश का ध्यान करते हैं। वह हमें यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रतिभा का विकासे करे॥

The crux of the above explanation is as under :—

We meditate on that Supreme Effulgence of the Radiant Being, the Indwelling Controller, and Director of all. May He stimulate our intuition for the realisation of the TRUTH.

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति ओ३म्॥

OM Peace Peace Peace OM

